गो - मातृभूमि का प्रतीक

सनातन धर्म में **'गोविन्द'**, **'गायत्री'**, **'गंगा'** और **'गो'** नामों का भारी महत्व माना जाता है । चारों नामों में से **'गायत्री'**, **'गंगा'** एवम् **'गो'** के सम्बंध में लम्बे समय से समाज में एक भ्रान्ति चली आ रही है । इसके कारण देश को भूतकाल में भारी हानि हुई है और अभी भी हो रही है तथा आगे भी सम्भावना बनी रहेगी । इन के सम्बंध में भ्रान्तियों का जन्म कब और कैसे हुआ, इस बात को समझने हेतु सर्वप्रथम **'प्रतीकीकरण'** के सिद्धान्त एवम् प्रतीकीकरण के कुछ उदाहरणों को निम्न पंक्तियों में समझने का प्रयास करेंगे । *(**'सनातनधर्म का आधार-गायत्री मंत्र'** एवम् **'गंगा'-आकाशगंगा का प्रतीक** नामक लेख पुस्तक के इसी भाग में देखें।)*

1. "प्रतीकीकरण" (Symbolisation) का सिद्धान्त - सनातन धर्म का आधार :-

वस्तुत: ***'परमात्मा'*** एवम् सभी परमात्म-शक्तियाँ ***अव्यक्त*** हैं तथा उन सभी शक्तियों का स्वरूप निराकार है, परन्तु **ऋषि विश्वामित्र** ने सर्वप्रथम **'गायत्री-मंत्र'** द्वारा **'सगुण-साकार'** उपासना के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया । ऐसा लगता है, कि वैदिक काल के प्रारम्भ में ही साकार प्रतीकों की अवधारणा कर ली गई थी तथा ब्राह्मणग्रंथों में इन्हीं देवताओं की कुछ और विकसित रूप से व्याख्या की गई । अन्त में **'पौराणिक काल'** में वेदों के गूढ़ ज्ञान को सरल बनाने हेतु **'कथाओं' एवम् मिथकों**[a] का सृजन किया गया तथा **'प्रतीकों'** (मूर्तियों) को कलाकृतियों के रूप में ठोस आधार प्रदान किया गया और तब इस आधार पर **'वैश्वानर'** से लेकर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती, दुर्गा, श्रीगणेश, सूर्य, अग्नि, इन्द्र, वरुण, कुबेर, जल, पृथ्वी (मातृभूमि), आकाशगंगा, शेषनाग आदि सभी देवी-देवताओं को मानव आकृति प्रदान की गयी । प्रतीकीकरण से पूजा-अर्चना करने में जन-साधारण को बहुत सुविधा हुई, अतएव इस विचार को तत्कालीन समाज ने भारी बहुमत से स्वीकार कर लिया । चूँकि हमारे ऋषि भविष्य दृष्टा थे, अतएव ***उन्हें यह ज्ञान था, कि प्रकृति के सिद्धान्तों के अनुरूप भारतीय संस्कृति एक समय ऐसे शासन के दौर से गुजरेगी, जब ज्ञान-विज्ञान की प्रलय हो जायेगी, इसीलिए उन्होंने परमात्मा तथा सभी परमात्म शक्तियों के निर्गुण-निराकार स्वरूप पर आधारित सम्पूर्ण ज्ञान को प्रतीकों एवम् कथाओं के रूप में परिवर्तित करने का निर्णय लिया तथा इस प्रकार उसे हम तक पहुँचाने की व्यवस्था भी कर गये ।*** इस बात का संकेत मार्कण्डेय पुराण में इस प्रकार से मिलता है:- पृथ्वी पर प्रलय आ गयी । सब ओर जल ही जल हो गया और सभी कुछ नष्ट हो गया । तब सात ऋषियों ने पृथ्वी पर से बीजों को इकट्ठा किया और उन्हें नाव पर रखकर नाव को खेते हुए प्रकाश की ओर बढ़े । तब उन्हें भगवान कृष्ण बाल रूप में पैर का अँगूठा चूसते हुए पीपल के पत्ते पर मुस्कुराते हुए दिखे, इत्यादि...। ***यह भाषा प्रतीकों की भाषा***

है। आदरणीय पाठकगण इसे ठीक से समझने का प्रयास करें। इस प्रकार के साहित्य को आधिदैविक साहित्य के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार प्रतीकों द्वारा उपासना करना 'हिन्दू-धर्म' की विशेषता बन गयी। प्रतीकों का निर्माण मिट्टी, पत्थर, धातु, लकड़ी आदि के पदार्थों से किया गया। *साधक मूर्ति में भगवान की भावना करके साधना करने लगा। यद्यपि इस सगुण-साकार पूजा पद्धति का विरोध करने वाले निराकारवादी तब भी थे और आज भी हैं, फिर भी सगुण-साकार पूजा पद्धति सरल है, अतएव जन-सामान्य को स्वीकार्य है।*

2. प्रतीकीकरण के कुछ उदाहरण :- सूर्य देवता को स्वर्ण मुकुट से मण्डित सात घोड़ों[b] के रथ पर तेजस्वी मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया। अग्नि शिखाओं के मध्य हाथ में हवि का चुरु[c] लिए अग्नि देवता के प्रतीक का निर्माण किया गया। करोड़ों वोल्ट की बिजली[d] के स्वामी गरजते हुए मेघ को सभी देवों एवम् इन्द्रलोक के राजा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। उसके हाथ में बज्र[e] दे दिया गया तथा उसको हर प्रकार की भोग-विलास की सामग्री उपलब्ध करायी गयी। पृथ्वी को **'शेषनाग'** पर स्थित दिखलाया गया, क्योंकि शेषनाग **गुरुत्वाकर्षण** का प्रतीक है। इसी प्रकार प्रकृति में प्राप्त सभी सूक्ष्म शक्तियों जैसे:- ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, हनुमान, दुर्गा, इत्यादि को मानव रूप दिया गया। तत्पश्चात् पशु-पक्षियों, वृक्षों आदि को उनकी विशिष्ट ***'प्रवृति'*** के अनुरूप प्रतीकों की भाषा में रूपान्तरित किया गया। सनातन-धर्म में प्रतीकों की संख्या सैंकड़ों में न होकर हजारों में है। **'बीजाक्षर'** एवम् **'बीजमंत्र'** आदि भी प्रतीकीकरण की कड़ी में ही है। ऐसा प्रतीत होता है, कि इन सबका गठन साहित्यकारों, कलाकारों और वैज्ञानिकों की संयुक्त गोष्ठी में किया गया होगा।

3. मातृभूमि का प्रतीक ''गो'':- हिन्दी वृहद् कोश में ***'गो'*** शब्द के सत्ताइस अर्थ दिए गये हैं, उनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं- इन्द्रियाँ, वाणी, रश्मि, बैल, गाय, पृथ्वी (मातृभूमि) इत्यादि। अतएव प्रतीकीकरण की इस कड़ी में **'गो'** को **'मातृभूमि'** का प्रतीक तय किया गया, कारण कि जिस प्रकार से हमारी **'पृथ्वी' (मातृभूमि)** हमारा भरण-पोषण अन्न, फल-फूल, जल, वनस्पति आदि पैदा करके करती है; ठीक उसी प्रकार **'गो'** भी अपने दूध, मूत्र, गोबर एवम् पँचगव्य आदि से हमारे जीवन को माता की भाँति पालती तथा सुदृढ़ बनाए रखती है। भारत कृषि-प्रधान देश होने के कारण भी **'गो'** द्वारा उत्पन्न बैलों से कृषि कार्य में ***'गो'*** का सदियों से महान योगदान रहा है। इस प्रकार **'गो'** ने जीवनदायिनी बनकर हमारे देश की महान सेवा की है। अतएव

मातृभूमि का प्रतीकात्मक चित्र

'गो' के वृद्ध हो जाने पर उसे कत्लखाने भेज देना एक निन्दनीय अपराध है । इसे कानून बनाकर समाप्त किया जाना चाहिए, परन्तु साथ ही **'गो'** की मृत्युपर्यन्त संरक्षण की पूरी व्यवस्था भी की जानी चाहिए ।

भोजन से पूर्व हर हिन्दू गाय के लिए एक रोटी अवश्य निकालता है । वस्तुतः गाय को एक रोटी देना प्रतीकात्मक है । इस प्रतीकात्मक दैनिक क्रिया से हमारे पूर्वजों द्वारा यह शिक्षा देने का प्रयास किया गया है, कि स्वयम् भोजन करने से पूर्व हम यह चिन्ता करें, कि मातृभूमि (गो) का कोई भी सदस्य भूखा तो नहीं है, यदि है, तो स्वयम् के भोजन करने के साथ वह उनके भोजन की व्यवस्था में सहयोग भी करे । हमारे पूर्वजों ने हिन्दू के संस्कारों में प्रतीकों की भाषा के माध्यम से महान से महान विचारों को पिरो दिया है । आज इस प्रतीकात्मक भाषा का खुलासा करने की परम आवश्यकता है । श्रीराम ने तो राष्ट्र रक्षा एवम् राष्ट्र सम्वर्धन हेतु अपना पूरा जीवन ही त्यागमय बना डाला था, जबकि भगवान श्रीकृष्ण बचपन से लेकर अन्त तक गोपालक (राष्ट्र-पालक) का कर्त्तव्य निभाते रहे । उन्होंने बचपन में ही अघासुर, बकासुर, पूतना जैसे नरभक्षी राक्षसों का विनाश किया था तथा अन्त में दुर्योधन जैसे आततइयों का विनाश करवा कर युधिष्ठिर को धर्म-रक्षक के सिंहासन पर आरूढ़ किया ।

4. प्रतीकों से भटकाव:- ***पृथ्वी पर सभी 33 कोटि (प्रकार) के देवताओं[f] (वसु = 8, रुद्र = 11, आदित्य = 12, इन्द्र = 1, प्रजापति = 1) का प्रभाव है। चूँकि 'गो' पृथ्वी की प्रतीक है, अतः पौराणिकों ने 'गो' (प्रतीक) में इन सभी देवताओं का वास मान लिया ।*** अब जिस प्रकार मन्दिर में भगवान शंकर, भगवान विष्णु, भगवान राम एवम् भगवान् कृष्ण आदि की मूर्तियाँ स्थापित करके भक्ति-भाव से उनकी पूजा-अर्चना की जाती है, ठीक उसी प्रकार से गाय भी हमारी चलती-फिरती देवता बन गयी और हम श्रद्धा भक्ति से उसकी आरती उतारने लगे ।

वैदिक धर्म पूर्ण रूप से मानवतावादी धर्म है । उसके द्वारा किसी की हत्या तो दूर की बात है, वह तो किसी भी प्राणी के अहित तक की कामना नहीं करता, अतएव उपकार करने वाले सभी प्राणियों. जैसे- पशुओं, पक्षिओं, वृक्षों, वनस्पतियों आदि के प्रति कृतज्ञतापूर्वक आदर देना और सब के प्रति विनम्र बने रहना उदात हिन्दू संस्कृति का मुख्य अंग रहा है । ***इसीलिए हम ''गो'' के द्वारा प्राप्त लाभों से इतने भावुक हो उठे, कि हमारे मनों में यह भाव गहराने लगा, कि गाय की हर हाल में रक्षा होनी चाहिए।*** ऐसा लगता है, कि कदाचित् भूतकाल में गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करके अवध्य घोषित कर दिया गया हो । ***सर्वांगीण सोच तो यही है कि मातृभूमि की हत्या न हो, परन्तु भावना के अतिरेक में हम प्रतीक में ही रह गये और उसके मूल भाव की उपेक्षा कर दी । परन्तु चिन्ता का विषय तो यह है, कि हमारे धर्माचार्य प्रतीकों की भाषा को जनता के समक्ष खोल कर नहीं बतला रहे हैं, जो उनका मुख्य कर्त्तव्य भी है, जिसके कारण समाज में भ्रान्ति फैली हुई है।***

इतिहास साक्षी है, कि आक्रान्ताओं ने अपनी फौज के आगे सौ गायें खड़ी कर लीं और हमने मातृभूमि उनके हवाले कर दी । इस तरह की महाभूल के कारण हमने एक सहस्र वर्षों तक गुलामी भी भोगी । आज भी इस भूल का एहसास करके सुधार करने की आवश्यकता है।

जिस मातृभूमि का गुणगान हम ''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' कह कर एवम् ''वन्दे मातरम् शस्य-श्यामलाम् मातरम्'' खड़े होकर सम्मान पूर्वक करते हैं, उस मूल को भूल कर हम प्रतीक में भटक गये, परन्तु क्या हम जननी जन्मभूमि का वास्तव में आदर करते हैं ? सच पूछिए, तो पूर्वजों द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप न तो हम आदर ही करते हैं और न ही सेवा । हाँ, हम मातृभूमि की रक्षा कर लेते हैं; वह भी कभी-कभी।

5. मातृभूमि की रक्षा एवम् सेवा पूजा के मानदण्ड:- निम्न पंक्तियों में ***'गो'*-हत्या** एवम् **'मातृभूमि की रक्षा'** तथा **'सेवा-पूजा'** के अर्थों को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है ।

(a) मातृभूमि के टुकड़े :- अंग्रेजो ने अपने शासन काल में तत्कालीन राजनैतिक कारणों अथवा शासकीय सुविधा को ध्यान में रखते हुए भारत भूमि के अनेक टुकड़े किए, जिसका विवरण[a] निम्न प्रकार से है :-

1. सन् 1876 = रूस की विस्तारवादी नीति से बचने के लिए अफगानिस्तान (जहां पर संस्कृत व्याकरण के महान आचार्य पाणिनि की जन्म स्थली है) का भू-भाग भारत से अलग करके स्वतंत्र बफर राज्य बना दिया ।
2. सन् 1904 = इसी प्रकार नेपाल को भी चीन तथा भारत के बीच बफर राज्य के रूप में स्वतंत्र देश बना दिया गया ।
3. सन् 1906 = भूटान तथा सिक्किम को भी स्वतंत्र देश बना दिया परन्तु, 1976 में सिक्किम ने भारत में अपना विलय कर लिया ।
4. सन् 1911 = श्री लंका को स्वतंत्र देश बना दिया ।
5. सन् 1914 = तिब्बत को चीन तथा भारत के बीच बफर राज्य बना दिया ।
6. सन् 1935 = इसी प्रकार बर्मा को भी स्वतंत्र देश बनाया गया ।
7. सन् 1947 = भारत के पश्चिमी भूभाग एवं पूर्वी बंगाल (आज स्वतंत्र बांगलादेश) को भारत से काटकर स्वतंत्र देश पाकिस्तान बनाया गया ।
8. अंगेजो ने जाते-जाते मालद्वीप को भी एक स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया ।
9. सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण करके 40,000 वर्ग मील के लगभग भूमि पर कब्जा कर लिया। तथा 1948 में पाकिस्तान ने भी 1/3 कश्मीर का भू-भाग भारत से छीन लिया।

ये सभी गो हत्या के स्पष्ट प्रमाण हैं । इस प्रकार गो हत्या होती रही और हम चुप रहे । 1999 में कारगिल युद्ध में भारत की एक-एक इंच भूमि की रक्षा करके **'गो रक्षा'** का उदाहरण प्रस्तुत किया गया । 1947 से आज तक फौज के रण-बाँकुरे अपनी जान की बाजी लगाकर कश्मीर की रक्षा करने में दिन-रात जुटे हुए हैं।

---

a हिन्दू सभा वार्ता के साप्ताहिक पत्र दिनांक 10-16 अगस्त 2005 के पृष्ठ 6 से साभार उद्धृत।

(b) पर्यावरण का प्रदूषण:- आज हम सब मिलकर पूरी पृथ्वी के पर्यावरण को दिन-रात प्रदूषित करने में लगे हुए हैं । नदियाँ, समुद्र, वायु, पृथ्वी सब ओर प्रदूषण ही प्रदूषण है । वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से स्वच्छ वायु मिलना कठिन होता जा रहा है । **'ओजोन'** छतरी तक में छेद हो गया है । पूरी पृथ्वी का तापमान बढ़ गया है । वर्षा-चक्र तथा ऋतु-चक्र प्रभावित हो रहे हैं । पृथ्वी पर निवास करने वाले अन्य सभी प्राणियों को हमने उनके द्वारा शुद्ध जल एवम् शुद्ध वायु प्राप्त करने के अधिकार को छीन लिया है, यह सब घोर पाप है तथा ***गो हत्या का स्पष्ट प्रमाण है ।***

(c) नैतिक एवम् आध्यात्मिक प्रदूषण:- पर्यावरण के प्रदूषण के अतिरिक्त ध्वनि-प्रदूषण एवम् विचारों का प्रदूषण सबसे खतरनाक बाते हैं । इस कारण पृथ्वी पर अनेक कठिन रोग फैल रहे हैं और सात्विक वृत्ति के लोग दु:खी हो रहे हैं । रामायण काल में भी जब इसी प्रकार के प्रदूषण की अति हो गयी थी, तब कहा जाता है, कि ***पृथ्वी 'गो' का रूप धारण करके ब्रह्मा के पास गुहार करने गयी थी ।*** जल, वायु, अग्नि, इन्द्र आदि सभी देवता भी साथ में भगवान से पुकार करने गये थे, क्योंकि वे सभी प्रदूषित हो रहे थे । ***आज के संदर्भ में भी इस प्रतीकात्मक भाषा को ठीक से समझने की आवश्यकता है ।*** रामायण काल जैसा ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, घृणा, ईर्ष्या, राग, द्वेष रूपी दस सिर वाला रावण हम सब पर बुरी तरह से हावी है और यह तब तक हावी रहेगा, जब तक कि हमें भौतिक जगत के भोगों की कामना बनी रहेगी अथवा **जब तक हम इन भोगों की कोई सीमा रेखा तय नहीं करेंगे** । रावण के इसी ताण्डव के कारण ही आज समाज में व्यभिचार, हत्याएं, लूटपाट, रिश्वत खोरी, पापाचार, भ्रष्टाचार तेजी से पनप रहा है । अतएव स्पष्ट है, कि मातृभूमि की सेवा नहीं हो रही है । टैक्स चोरी, बिना काम के वेतन लेना, हर क्षेत्र में बेईमानी, बड़े-बड़े घोटाले, चोरी और सीनाजोरी, कानूनी दाँव-पेंच से बच निकलना, नैतिक मूल्यों का भारी पतन, यह सब कहाँ की मातृभूमि की सेवा है ? ***वस्तुत: यही 'गो हत्या' है ।*** हम ***'गो हत्या' के अर्थ को गाय (पशु) की हत्या करने तक ही सीमित किए जा रहे हैं ।*** आज विज्ञान की पीढ़ी को सही-सही मार्ग दिखलाए जाने की परम आवश्यकता है, जिससे समाज में **'गो'** के सम्बन्ध में फैली भ्रान्ति दूर की जा सके ।

6. परिभाषाएं:- a. मिथक = ऐसी कथा जिसका शाब्दिक अर्थ कुछ और हो, परन्तु वास्तविक अर्थ कुछ और **b. सात घोड़े** = सात रंगों के प्रतीक अर्थात् VIBGYOR **c. चुरु** = शक्तिपुञ्ज। **d.** विद्युत शक्ति जो सभी अन्य शक्तियों में बदली जा सकती है, इसलिए इन्द्र सभी देवों का राजा कहलाया। **e. बज्र** = करोड़ों वोल्ट की विद्युत का प्रतीक । **f.** (i) **वसु** = जो देवता पृथ्वी पर वास करते हैं तथा जिनसे सम्पूर्ण जगत का जीवन चलता है, जैसे जल, वायु, अग्नि, इत्यादि। (ii) **रुद्र** = पृथ्वी पर जिन शक्तियों द्वारा विनाश होता है, जैसे बाढ़, अकाल, तूफान, जंगल की आग, ज्वालामुखी, इत्यादि। (iii) **बारह आदित्य** = बारह राशियों पर भ्रमण करते सूर्य का सम्पूर्ण प्राणी जगत पर प्रभाव पड़ता है । (iv) **इन्द्र** = करोड़ों वोल्ट की बिजली का स्वामी - गरजता हुआ मेघ (v) **प्रजापति** = ब्रह्मा, अर्थात् पदार्थ जगत का सृजनकर्त्ता ।

हरि: ॐ तत् सत् !